टिड्डी कीट के नियंत्रण हेतु एडवायजरी

आज हमारा देश जहां कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है वही टिड्डी दलों के प्रकोप ने किसानों की नींद उडा दी है। रेगिस्तानी टिड्डी जिसका वैज्ञानिक नाम सिस्टोसेरा ग्रिगेरिया है ग्रीष्म मानसून के साथ हमारे देश में आते हैं तथा जुलाई से अक्टूबर तक फसलों को नुकसान पहुंचाते है किन्तु इस वर्ष टिड्डी दल के समय से पूर्व आने से किसानों को काफी नुकसान उठाना पड सकता है। टिड्डी के प्रजनन पर वर्षा का प्रभाव ज्यादा होता है। यदि गर्मी एवं सर्दी के मौसम में वर्षा होती है तो टिड्डी के बच्चे का निकलना और झुण्ड में आक्रमण करना स्वाभाविक है। इस वर्ष जो टिड्डी का आक्रमण हुआ है उसकी सबसे बड़ी वजह जलवायु परिवर्तन है क्योंकि इस वर्ष पाकिस्तान एवं अरब देशों मे सर्दी के मौसम में वर्षा हुई है साथ ही अप्रैल और मई में भी वर्षा होने से टिड्डियों का प्रजनन अधिक हुआ और टिड्डी के असामयिक झुण्ड भारत आये।

टिड्डी वयस्क होने से पूर्व समूह में रहती है लेकिन प्रौढ़ होते ही दल बनाकर उडने लगती है इसीलिए इसे टिड्डी दल के नाम से पुकारते है। यह दल उडान भरते हुए हवा की दिशा में एक दिन में लगभग 100 से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकती है। एक किलोमीटर क्षेत्र के झुण्ड में लगभग 400 लाख टिड्डियां होती है जो रात के समय तूफान की तरह आकर खेत में बैठती है। ये टिड्डी दल रास्ते में आने वाली फसलों एवं वनस्पतियों को चट कर जाते है। यह कीट हर वर्ष नहीं आता है किन्तु जब आता है तो भयंकर नुकसान पहुंचाता है।

अवयस्क टिड्डी दल

वयस्क टिड्डी दल

राष्ट्रीय स्तर पर क्षति पहुंचाने वाली बहुभक्षी टिड्डियों इस वर्ष अफ्रीका देशों से चलकर पाकिस्तान होते हुए राजस्थान के रास्ते से भारत में प्रवेश किया है। पाकिस्तान सीमा पर इन टिड्डियों ने भारी तबाही मचाई है अब हमारे देश में राजस्थान, गुजरात एवं मध्य प्रदेश होते हुए उत्तर प्रदेश के कई जिलों में प्रवेश की सूचना प्राप्त हो रही है। प्रदेश में टिड्डी दलों के प्रवेश को देख प्रदेश सरकार ने सीमावर्ती जिलों में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिये है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर, बागपत, सहारनपुर आदि कई जिलों में इन दलों के प्रकोप की सम्भावना बनी हुई है अतएवं यह आवश्यक हो जाता है कि किसान भाईयों को इन टिड्डी दलों के बारें में विस्तृत जानकारी रहे।

टिड्डी का जीवन चक्र

टिड्डियों के जीवन चक्र में मुख्य रूप से तीन अवस्थाऐं होती है।

अण्ड़ा– टिड्डियां जहां पर रात में रूकती है वहां मादा टिड्डियां अपने उदर भाग को जमीन में लगभग 10–15 सेमी तक गहराई में गाडकर जहां नमी मिलती है अपने अण्ड़े देती है। एक बार में एक टिड्डी 60 से 80 अण्ड़े देती है। कुल 3–4 बार में एक वयस्क मादा 250–300 अण्ड़े देती है। अण्ड़े चावल के आकार में नारंगी पीले रंग के होते है। जिस जगह मादा अण्ड़े देती है वहां सुराख दिखाई देते है जिसके मुॅह पर सफेद झाग से नजर आते है।

शिशु टिड्डी– जमीन में नमी एवं तापमान के अनुसार 12–20 दिन में अण्ड़ों से शिशु निकलते है। ये पंखहीन होते है तथा उड़ नहीं सकते है बल्कि जमीन में फुदक–फुदक कर समूह में चलते है। शुरू में शिशुओं का रंग सफेद होता है जो कि बाद में काले–भूरे रंग के हो जाते है।

वयस्क टिड्डी– शिशु से वयस्क टिड्डी बनने के लगभग 15–30 दिन का समय लगता है। टिड्डी पहले गुलाबी फिर भूरी एवं अंत में पीले रंग की हो जाती है। मादा टिड्डी आकार में बड़ी होती है और इनके शरीर में काले रंग के धब्बे होते है। वयस्क टिड्डी दल परिपक्वता की स्थिति में तभी पहुंच पाते है जब उन्हें प्रजनन के लिए अनुकूल स्थितियां मिलती है। सामान्यतः मैथुन के 2 दिन के अंदर ही मादा टिड्डी अण्ड़े देने शुरू कर देती है।

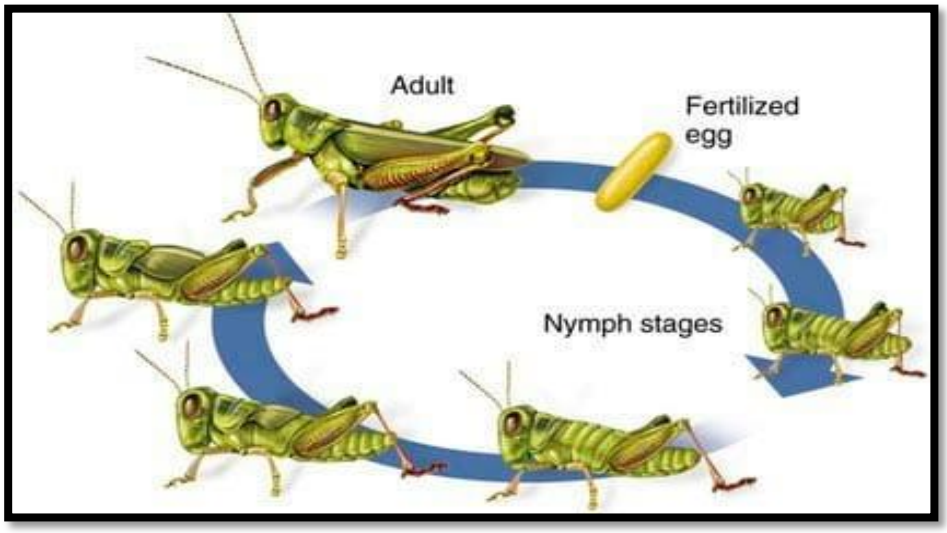

क्षति का स्वरूप

इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनो ही फसलों एवं वनस्पतियों को काटकर एवं चबाकर नुकसान पहुंचाते है। इन टिड्डियों में अपने व्यवहार एवं आदतों को बदलने की क्षमता होती है। यही कारण है कि ये टिड्डियां जहां भी जाती है उस परिस्थिति में भयंकर क्षति पहुंचाती है। यह बहुभक्षी कीट होते है तथा सभी प्रकार की फसलों एवं वनस्पतियों को खाकर चट कर जाते है। एक टिड्डी प्रतिदिन अपने वजन के बराबर वनस्पति खा जाती है।

नियत्रण के उपाय

1. अपने जनपद, क्षेत्र में टिड्डी दल के प्रवेश की सूचना प्राप्त करते रहे तथा खेत की निगरानी करते रहे।
2. टिड्डियां रात के समय खेत में बैठती है तथा मादा टिड्डी अण्ड़े देती है अतएवं खेत में टिड्डियों को न बैठने दे।
3. टिड्डियों को भगाने हेतु टिन के डब्बों, ड्रम, थाली, ढोल एवं तेज आवाज उपकरण को बजाये तथा सामूहिक रूप से शोर करें।
4. शिशु टिड्डियों के नियंत्रण हेतु खेतों के चारो तरफ खाई खोद देनी चाहिए जिसमें सभी शिशु गिरकर इकट्ठा हो जायेंगे इसके बाद उन्हें दवा के प्रयोग से मार दे।
5. गर्मियों के दिनों में खाली खेतों की गहरी जुताई करें ताकि जमीन के अंदर मौजूद अण्ड़े आदि नष्ट हो जायें।
6. वयस्क टिड्डियों के नियंत्रण हेतु निम्न रसायनों में किसी एक का 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

1	मैलाथियान 50 ई.सी.	–	1850 मिली0
2	मैलाथियान 25 डब्लू पी	–	3700 ग्राम
3	क्लोरपाइरीफास 50 ई.सी.	–	500 मिली0
4	क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी.	–	1200 मिली0

कीटनाशको का प्रयोग शाम या रात के समय किया जाना लाभकारी रहता है।

छिड़काव यंत्र

सम्पर्क सूत्र– आवश्यकता पड़ने पर निम्न को सूचित करें या सम्पर्क करें

- केन्द्रीय एकीक्रत नाशी जीव प्रबंधन, लखनऊ
- जनपद के जिला कृषि रक्षा अधिकारी
- जनपद के उप कृषि निदेशक
- जनपद के स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्र
- क्षेत्र में स्थापित कृषि विश्वविद्यालय

(एस.के. सचान)
निदेशक प्रसार